HINDI (HONS)-2nd SEMESTER

Topics- भारतेंदु हरिश्चंद्र / Class-1/ Hindi Method

भारतेंदु हरिश्चंद्र की छोटी सी मुकरियां बहुत कुछ कहने की क्षमता रखती है। इन मुकरियों की समानता हम बिहारी के दोहों के साथ कर सकते हैं। जिस तरह बिहारी के दोहे सागर में गागर भरने के बात को चरितार्थ करते हैं वैसे ही भारतेंदु की मुकरियां थोड़े से में अधिक कहने का सामर्थ्य रखते हैं। भारतेंदु हरिश्चंद्र ने इस मुकरियों के माध्यम से उस समय के समाज का कच्चा-चिट्ठा प्रस्तुत किया है। इन मुकरियों में सामाजिक घटनाएं सबल रूप में उद्घाटित हुई है। भारतेंदु की मुकरियां सामाजिक, राजनीतिक उठापटक प्रस्तुत करने के साथ-साथ देश-दशा का चित्रण भी सशक्त रूप में करती हैं। एक उदाहरण देख सकते हैं-

"सिटी लेकर पास बुलावे।
रुपया लेकर निकट बैठावे॥
ले भागे मोहि खेलहिं खेल।
क्यों सखि साजन, नहीं सखि रेल॥"

उदित मुकरियों में रेल के विकास को दर्शाया गया है, अर्थात 1860 के बाद रेल का विकास भारत के लिए एक अद्भुत घटना थी।

HINDI (HONS)-2nd SEMESTER

Topics- बसंत होली/Class-2/ Hindi Method

बसंत होली भारतेंदु हरिश्चंद्र की उत्कृष्ट कविताओं में स्थान रखती है। इस कविता में बसंत ऋतु के माध्यम से विरहणी नायिका के प्रेम को दर्शाया गया है। भारतीय ऋतुओं में बसंत ऋतु का श्रेष्ठ स्थान है। बसंत को ऋतु का राजा कहा जाता है। बसंत ऋतु में संपूर्ण प्रकृति सिंगार कर लेती है। नव-विवाहित जोड़े को यह ऋतु उमंग भर देती है। बसंत में ही होली का त्यौहार मनाया जाता है। पेड़ फूलों से पट जाते हैं, प्रत्येक डाल की पत्तियां नया आकार ग्रहण कर लेती है। दक्षिणी हवा बहने लगती है। आम में बैर लग जाते हैं। कुल मिलाकर प्रकृति का अद्भुत रूप देखते ही बनता है, प्रगति के इसी अद्भुत रूप की छटा बसंत होली कविता में एक विरहणी के माध्यम से देखी जा सकती है। कविता की प्रथम पंक्ति ही विरहणी की उद्दाम व्यथा इस प्रकार प्रकट करती है-

जोर भयो तन काम को आयो प्रकट बसंत।
बाढ़यो तन में अति बिरह भो सब सुख को अंत॥

HINDI (HONS)-2nd SEMESTER

Topics- कामना/ Class-3/ Hindi Method

'कामना' कविता में रामनरेश त्रिपाठी राष्ट्र के प्रति स्वतंत्र विचारों को रख रहे हैं। उनका कहना है कि- ईश्वर तुम मुझे उसी देश में जन्म देना जहां में स्वतंत्र रूप से रह सकूं। स्वतंत्र रूप से अपने विचारों को रख सकूं, यही नहीं में अपनी स्वतंत्रता के साथ-साथ दूसरे की स्वतंत्रता का भी ध्यान रखू, जहां कोई भी शक्तिशाली व्यक्ति किसी निर्बल व्यक्ति के सुख में बाधक ना बने। सभी को जहां समान माना जाए, सभी को उन्नति के पर्याप्त अवसर दिए जाएं। रात जहां शांति प्रदान करने वाली हो और दिन हर्ष से भरे हुए हो। अच्छा शासन हो जहां सभी जगह समानता की भावना हो- उसी स्वतंत्र देश में हे ईश्वर मुझे जन्म देना यही मेरी कामना है।

HINDI (HONS)-2nd SEMESTER

Topics-पुष्प विकास/ Class-4/ Hindi Method

'पुष्प विकास' कविता में रामनरेश त्रिपाठी एक पुष्प के विकास को दर्शा रहे हैं। अहंकार में किसी मनुष्य को नहीं पड़ना चाहिए क्योंकि अहंकार मनुष्य के विकास का हरण कर लेता है। फुल को अहंकार जब हुआ तो उसकी स्थिति करून हो गई और जब उसे उसकी वास्तविक स्थिति का भान हुआ तो संपूर्ण अनकार समाप्त हो गया। प्रस्तुत कविता में पुष्प जब आँख खोलकर श्रिष्टी को देखने लगी तो उसे आभास हुआ कि यह श्रिष्टी बहुत ही सुंदर है। तब से उसके जो आँख खुले हैं फिर कभी बंद नहीं हुए तभी से यह श्रिष्टी फूलों की अद्भुत शोभा से पट गई।